सन्देश संख्या ६५

(सन्देश संख्या ६४ से क्रमशः)

'अनाम–अस्तित्व' के सहस्रनाम (क्रमशः)

छन्द संख्या – ८६ (सात नाम)

१. सुवर्ण बिन्दु : अस्तित्व का स्वर्णिम उद्‌गम (८००)
२. अक्षोभ्य : न न होने वाला तथ्य (८०१)
३. सर्ववागीश्वरेश्वर : स्पन्दन के सभी तथ्यों का तथ्य (८०२)
४. महाह्रद : सभी हृदयों का हृदय (८०३)
५. महागर्त : सभी मायाओं की माया (८०४)
६. महाभूत : सभी सारों का सार (८०५)
७. महानिधि : सभी प्रावधानों का प्रावधान (८०६)

छन्द संख्या – ८७ (दस नाम)

१. कुमुद : परमानन्द उत्पन्न करने वाले (८०७)
२. कुन्दर : धरती को उठाने वाले (८०८)
३. कुन्द : प्रस्फुटन (न कि अनुकरण) (८०९)
४. पर्जन्य : कृपावर्षण (८१०)
५. पावन : पवित्रकरण (८११)
६. अनिल : सजीव प्राणियों का श्वास–प्रवास (८१२)
७. अमृतांश : सुधा से संबंध रखने वाले (८१३)
८. अमृतवपु : अमृत अवयव (८१४)
९. सर्वज्ञ : पूर्ण प्रत्यक्ष बोध (८१५)
१०. सर्वतोमुख : सभी आयामों का सामना करने वाले (८१६)

छन्द संख्या – ८८ (नौ नाम)

१. सुलभ : प्राप्त किया जा सकता है (८१७)
२. सुव्रत : पूजा जा सकता है (८१८)
३. सिद्ध : पहुँचा जा सकता है (८१९)
४. शत्रुजित् : (जब) मन(जो कि शत्रु है)परास्त हो चुका हो (८२०)
५. शत्रुतापन : (जब) मन (जो कि शत्रु है) भस्म हो चुका हो (८२१)
६. न्यग्रोध : भ्रान्ति (माया) (८२२)
७. उदुम्बर : तथापि पुष्टिकारक (८२३)
८. अश्वत्थ : वृक्ष (८२४)
९. चाणूरान्ध्रनिषूदन : सर्वश्रेष्ठ पहलवान (जिसने अत्यन्त बलशाली पहलवान ''चाणूर'' को पूर्ण रूप से परास्त किया) (८२५)

छन्द संख्या – ८९ (नौ नाम)

१. सहस्रार्चि : हजारों रश्मियाँ (८२६)
२. सप्तजिह्व : सात जिह्वा (१–सांख्य, २–योग, ३–वेदान्त, ४–वैशेषिक, ५–मीमांसा, ६–न्याय, ७–मौन)से बोलने वाले (८२७)
३. सप्तैधा : सात जिहाओं के माध्यम से बोलने वाले वक्ता (८२८)
४. सप्तवाहन : सात अश्वों (श्वेत रश्मि के सात रंग) की सवारी करने वाले (८२९)
५. अमूर्ति : किन्तु अरूप (८३०)
६. अनघ : तथापि दोषरहित (८३१)
७. अचिन्त्य : विचार के जाल के अन्दर फँसाये नहीं जा सकते (८३२)
८. भयकृत् : डराने वाले (८३३)
९. भयनाशन : तथापि सम्पूर्ण भय का नाश करने वाले (८३४)

छन्द संख्या – ६० (बारह नाम)

१. अणु : अत्यन्त लघु (८३५)
२. बृहत् : अत्यन्त विशाल (८३६)
३. कृश : अतिक्षीण (८३७)
४. स्थूल : अत्यन्त मोटा (८३८)
५. गुणभृत् : गुणों को उत्पन्न करने वाले (८३९)
६. निर्गुण : तथापि गुण विहीन (८४०)
७. महान् : और ड्डिगर भी बहुत बड़ा (८४१)
८. अधृत : पकड़े न जा सकने वाले (८४२)
९. स्वधृत : तथापि स्वयं के द्वारा स्वयं के लिये पकड़े जा सकने वाले (८४३)
१०. स्वास्य : (क्यों कि) स्वयं ''इस'' का ही है (८४४)
११. प्राग्वंश : वंश–परम्परा का मूल (८४५)
१२. वंशवर्धन : वंश–परम्परा का संवर्द्धन (८४६)

छन्द संख्या – ६१ (दस नाम)

१. भारभृत् : सम्पूर्ण भर उठाने वाले (८४७)
२. कथित : ''कथा'' (सत्संग अर्थात् उत्तम लोगों का एकत्र होकर सत्य का अन्वेषण करना) के माध्यम से स्मरण किये जाने वाले (८४८)
३. योगी : युक्त (८४९)
४. योगीश : योगियों की प्रेरणा (८५०)
५. सर्वकामद : समस्त प्रेरणाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति (८५१)
६. आश्रम : सबका आश्रय (८५२)
७. श्रमण : कठिन परिश्रम करने वाले (८५३)
८. क्षाम : शाश्वत (८५४)
९. सुपर्ण : तथापि पत्ती की तरह भंगुर (८५५)
१०. वायुवाहन : श्वास–प्रश्वास तथा शरीर के अन्य वायु (प्रवाहों) में संतुलन बनाये रखने वाले (८५६)

छन्द संख्या – ६२ (दस नाम)

१. धनुर्धर : धनुष धारण करने वाले (८५७)
२. धनुर्वेद : धनुर्विद्या को जानने वाले (८५८)
३. दण्ड : अनुशासन (८५९)
४. दमयिता : संयमी (८६०)
५. दम : संयम (८६१)
६. अपराजित : अजेय (८६२)
७. सर्वसह : सहनशील (८६३)
८. नियन्ता : भाग्य को नियन्त्रित करने वाले (८६४)
९. नियम : विधान (८६५)
१०. यम : विनियम (८६६)

छन्द संख्या – ६३ (नौ नाम)

१. सत्त्ववान् : सत्य के भण्डार (८६७)
२. सात्त्विक : उच्च गुण (८६८)
३. सत्य : सच्चाई (८६९)
४. सत्यधर्मपरायण : सदैव ''जो है'' के प्रति निष्ठावान (और कभी भी ''क्या होना चाहिए'' में न फिसलने वाले) (८७०)
५. अभिप्राय : नीयत (८७१)
६. प्रियार्ह : प्रेम के योग्य (८७२)
७. अर्ह : पूजा के योग्य (८७३)
८. प्रियकृत् : प्रेम–कम (८७४)
९. प्रीतिवर्धन : प्रेम–संवर्द्धन (८७५)

छन्द संख्या – ९४ (दस नाम)

१. विहायसगति : ''निर्मन'' में अवस्थित (८७६)
२. ज्योति : पूर्ण रूप से जाग्रत (अर्थात् मन के अन्धकार में न पड़े रहना) (८७७)
३. सुरुचि : सौन्दर्यबोध (८७८)
४. हुतभुक् : त्याग के प्रति रूचि रखने वाले (८७९)
५. विभु : सबको आच्छादित करने वाली शून्यता (८८०)
६. रवि : सूर्य (८८१)
७. विरोचन : चमक (८८२)
८. सूर्य : दीप्ति (८८३)
९. सविता : रश्मियों का उत्पत्ति स्थल (८८४)
१०. रविलोचन : उज्ज्वल नेत्र (८८५)

छन्द संख्या – ९५ (दस नाम)

१. अनन्त : अविरत (८८६)
२. हुतभुक् : सभी त्यागों का क्षुधित ग्रहीता (८८७)
३. भोक्ता : आत्मसात् करने वाले (८८८)
४. सुखद : आनन्द को उन्मुक्त करने वाले (८८९)
५. नैकज : जिसका कभी जन्म नहीं (८९०)
६. अग्रज : प्रत्येक वस्तु के जन्म से पूर्व प्रकट होने वाले (८९१)
७. अनिर्विण्ण : जिसका अवसान नहीं हो सकता (८९२)
८. सदामर्षी : सदैव क्षमाशील (८९३)
९. लोकाधिष्ठानम् : समस्त प्राणियों का आधार (८९४)
१०. अद्भुत : विस्मय एवं रहस्य (८९५)

छन्द संख्या – ९६ (दस नाम)

१. सनात् : शाश्वतत्व (८९६)
२. सनातनतम : परम शाश्वत (८९७)
३. कपिल : कपिल मुनि (सांख्यदर्शन के) (८९८)
४. कपि : हनुमान (८९९)
५. अव्यय : बिना किसी अन्त के (९००)
६. स्वस्तिद : सुख और सुविधा प्रदान करने वाले (९०१)
७. स्वस्तिकृत् : सुख उत्पन्न करने वाले (९०२)
८. स्वस्ति : कल्याण ओर कुशल–क्षेम (९०३)
९. स्वस्तिभुक् : कल्याण–कामना (९०४)
१०. स्वस्तिदक्षिण : कल्याण हेतु आशीर्वाद (९०५)

छन्द संख्या – ९७ (नौ नाम)

१. अरौद्र : अक्रोध (९०६)
२. कुण्डली : कानों में कुण्डल धारण करने वाले (९०७)
३. चक्री : चक्र धारण करने वाले (९०८)
४. विक्रमी : शक्तिशाली (९०९)
५. ऊर्जितशासन : शासन की ऊर्जा (९१०)
६. शब्दातिग : सभी शब्दों के परे (९११)
७. शब्दसह : तथापि शब्दों के साथ सहयोग करनेवाले(९१२)
८. शिशिर : हिमवत् एवं मौन (९१३)
९. शर्वरीकर : अस्प (९१४)

छन्द संख्या – ९८ (आठ नाम)

१. अक्रूर : क्रूरता नहीं (९१५)
२. पेशल : दयालु (९१६)
३. दक्ष : विशेषज्ञ (९१७)
४. दक्षिण : अर्पण (गुरू को) (९१८)
५. क्षमिणां वर : आनन्दमय क्षमा (९१९)
६. विद्वत्तम : सर्वश्रेष्ठ प्रज्ञावान (९२०)

७. वीतभय : भय से मुक्ति (६२१)
८. पुण्यश्रवणकीर्तन : पावन संगीत का श्रवण करने वाले (६२२)

छन्द संख्या – ९९ (नौ नाम)

१. उत्तारण : आसक्ति से मुक्ति (६२३)
२. दुकृतिहा : अशुभ कर्मों को न करने वाले (६२४)
३. पुण्य : परम पवित्र (६२५)
४. दुःस्वप्ननाशन : बुरे सपनों को न करने वाले (६२६)
५. वीरहा : शक्तिशालियों को परास्त करने वाले (६२७)
६. रक्षण : (इस प्रकार) संतों की रक्षा करनेवाले (६२८)
७. सन्त : साधु (६२९)
८. जीवन : जीवन्त स्वरूप (६३०)
९. पर्यवस्थित : पारिस्थितिक संतुलन (६३१)

छन्द संख्या – १०० (नौ नाम)

१. अनन्तरूप : शाश्वतत्व की छवि (६३२)
२. अनन्तश्री : शाश्वतत्व का सौन्दर्य (६३३)
३. जितमन्यु : मन को परास्त करने वाले (६३४)
४. भयापह : भय को परास्त करने वाले (६३५)
५. चतुरश्र : बोध में निवास करने वाले (६३६)
६. गभीरात्मा : गहन अन्तर्दृष्टि (६३७)
७. विदिश : दिशा की ओर (६३८)
८. व्यादिश : विपरीत दिशा (६३९)
९. दिश : दिशा (६४०)

छन्द संख्या – १०१ (नौ नाम)

१. अनादि : उद्गमरहित (६४१)
२. भूर्भुव : स्थूल के साथ–साथ सूक्ष्म (६४२)
३. लक्ष्मी : समृद्धि (६४३)
४. सुवीर : सर्वोच्च त्राता (६४४)
५. रुचिराङ्गद : आकषक बाजूबन्द धारण करने वाले (६४५)
६. जनन : कारण (६४६)
७. जनजन्मादि : कारण और कार्य की जंजीर (६४७)
८. भीम : तथापि हृष्ट–पुष्ट (और जंजीर के बाहर) (६४८)
९. भीम पराक्रम : सर्वाधिक हृष्ट–पुष्ट अर्थात् पूर्णतः कार्य–कारण की जंजीर के बाहर (६४९)

छन्द संख्या – १०२ (नौ नाम)

१. आधारनिलय : मूल अस्तित्व (६५०)
२. धाता : वाहक (६५१)
३. पुष्पहास : हंसता हुआ पुष्प (६५२)
४. प्रजागर : समस्त जीवों के लिए करुणा (६५३)
५. ऊर्ध्वग : ''जो है'' के परम सत्य के प्रति निष्ठा (६५४)
६. सत्पथाचार : ''जो है'' से कभी भी न बिछुड़ने वाले (६५५)
७. प्राणद : व्यक्त जीवन (६५६)
८. प्रणव : ब्रह्माण्डीय ध्वनि ( ) (६५७)
९. पण : ''जो है'' उस सत्य के प्रति प्रतिबद्धता (६५८)

छन्द संख्या – १०३ (आठ नाम)

१. प्रमाण : ''जो है'' का साक्ष्य (६५९)
२. प्राणनिलय : सभी जीवन्त तत्वों में निवास (६६०)
३. प्राणभृत् : जीवनधारण में संतुष्टि (६६१)
४. प्राणजीवन : जीवन का जीवन्त स्वरूप (६६२)
५. तत्त्व : ''जो है'' का सार (६६३)

६. तत्त्ववित् : ''जो है'' उसकी जानकारी और इस प्रकार उससे मुक्ति (''जो है'' वह सत्य है, ''जो होना चाहिए'' वह तो अवधारणा मात्र है) (९६४)
७. एकात्मा : एकत्त्व (९६५)
८. जन्ममृत्युजरातिग : जन्म–मृत्यु वार्धक्य से परे (९६६)

छन्द संख्या – १०४ (नौ नाम)

१. भूर्भुवः स्वस्तरु : अहम् के स्थूल, सूक्ष्म आयामों में जीवनसुधा (९६७)
२. तार : विभेदकारी चित्तवृत्ति के बेड़ियों से पूर्ण और सहज रूप से मुक्त करने वाले (९६८)
३. सविता : प्रबोध (९६९)
४. प्रपितामह : पितामह के पिता (९७०)
५. यज्ञ : त्याग (समस्त अभिप्रायों का) (९७१)
६. यज्ञपति : त्याग को ग्रहण करने वाले (९७२)
७. यज्वा : सम्पन्न करने वाले भी (९७३)
८. यज्ञाङ्ग : त्याग के मूर्तरूप (९७४)
९. यज्ञवाहन : त्याग के वाहक (९७५)

छन्द संख्या – १०५ (नौ नाम)

१. यज्ञभृत् : त्याग को प्रोत्साहित करने वाले (९७६)
२. यज्ञकृत् : त्यागकर्ता (९७७)
३. यज्ञी : त्याग ही (९७८)
४. यज्ञभुक् : त्याग के लिए भूखा (९७९)
५. यज्ञसाधन : त्याग का अभ्यास (९८०)
६. यज्ञान्तकृत् : त्याग का संपूरण (९८१)
७. यज्ञगुह्यम् : त्याग का रहस्य (९८२)
८. अन्नम् : भोजन (९८३)
९. अन्नाद : भोजन प्रदान करने वाले (९८४)

छन्द संख्या – १०६ (आठ नाम)

१. आत्मयोनि : स्वयंगर्भ (सृकिर्ता एवं सृष्टि के मध्य कोई द्विभाजन नहीं) (९८५)
२. स्वयंजात : स्वतः उत्पन्न (९८६)
३. वैखान : स्वयं बन्धनमुक्त (९८७)
४. सामगायन : अद्वैत का संगीत (९८८)
५. देवकीनन्दन : कृष्ण (९८९)
६. स्रष्टा : सृकिर्ता (एवं सृष्टि) (९९०)
७. क्षितीश : पृथ्वीपति (९९१)
८. पापनाशन : पाप (अर्थात् मन) को मिटा देनेवाले (९९२)

छन्द संख्या – १०७ (आठ नाम)

१. शंखभृत् : शफ (मन की जागृति) धारण करनेवाले (९९३)
२. नन्दकी : आश्चर्यजनक परमानन्द प्रदान करनेवाले (९९४)
३. चक्री : चक्र (जीवन और मृत्यु का) धारण करने वाले (९९५)
४. शार्गधन्वा : धनुष (''जो है'' के प्रति सचेतनता) धारण करने वाले (९९६)
५. गदाधर : गदा (''क्या होना चाहिए'' से सुरक्षा) धारण करने वाले (९९७)
६. रथाङ्गपाणि : गीत गाने वाले (९९८)
७. अक्षोभ्य : कोई विद्वेष (अथवा पश्चात्ताप) नहीं (९९९)
८. सर्वप्रहरणायुध : ''जो है'' का सामना करने के लिए सभी क्षणों और परिस्थितियों में ऊर्जा के साथ तैयार (१०००)

छन्द संख्या – १०८ (अनाम–अस्तित्व की प्रार्थना के साथ समापन)

वनमाली गदी पद्मी शफी चक्री च नन्दकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ।।

नमः इति
(विष्णु सहस्रनाम परिपूर्ण)